6. निम्नलिखित श्लोक की सप्रङ्ग व्याख्या कीजिये–

तथा समक्षं दहता मनोभवं,
पिनाकिना भग्नमनोरथा सती।
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती,
प्रियेषु सौभाग्य फलाहि चारुता॥

अथवा

द्वयं गतं सम्प्रति शोचनीयतां,
समागम प्रार्थनया कपालिनः।
कला च सा कान्तिमती कलावत-
स्त्वमस्य लोकस्य च नेत्र कौमुदी॥

7. बाणभट्ट द्वारा चित्रित जाबालि आश्रम का वर्णन अपने शब्दों में कीजिये।
8. शिशुपाल वध के अनुसार कुशल वक्ता की वाणी की प्रभावशीलता का वर्णन कीजिये।
9. 'कुमारसम्भवम्' के पञ्चम सर्ग की कथा का सार अपने शब्दों में लिखिए।

खण्ड–स **2×16=32**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आपको अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

10. कादम्बरी में चित्रित प्रकृति सौन्दर्य का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
11. ''माघे सन्ति त्रयो गुणाः'' उक्ति की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।
12. शिव महिम्नः स्तोत्र में वर्णित भगवान शिव की विशेषताओं की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।
13. ऐतिहासिक महाकाव्यों में 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' का स्थान निर्धारण कीजिए।

470

MASA–05

June – Examination 2020

M.A. (Final) Examination

SANSKRIT

गद्य तथा काव्य

Paper : MASA-05

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड–अ **8×2=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार, एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1. (i) कादम्बरी के रचयिता का नाम बताइये।
   (ii) शूद्रक के पूर्व जन्म का नाम बताइये।
   (iii) माघ कहाँ के निवासी थे ?
   (iv) माघ की रचना का नाम बताइये।
   (v) 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' में किन राजाओं का वर्णन है ?
   (vi) 'विक्रमाङ्कदेवचरितम्' के रचयिता कौन हैं ?
   (vii) शिवमहिम्नः स्तोत्र के रचयिता का नाम बताइये।
   (viii) 'कुमारसंभवम्' किसकी रचना है ?

खण्ड—ब 4×8=32

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2. किसी एक गद्यांश की सप्रसङ्ग व्याख्या हिन्दी में कीजिए—

एकदा तु नातिदूरोदिते नव-नलिन-दल-सम्पुर-भिदि किञ्चिन्मुक्त-पाटलिम्नि भगवति सहस्रमरिचिमालिनी, राजनमास्थान-मण्डपगतमङ्गनाजनविरुद्धेन वामपार्श्वावलम्बिना कौक्षेयेकेण सन्निहितविषधरेव चन्दनलता भीषणरमणीयाकृतिः, अविरल-चन्दनानुलेपन धवलित-स्तनतटा उन्मज्ज-दैरावत कुम्भमण्डलेव मन्दाकिनी चूड़ामणि-संक्रान्त प्रतिबिम्बच्छलेन राजाज्ञेवमूर्तिमति राजभिः शिरोभिरुह्यमाना, शरदिव, कलहंस-धवलाम्बरा जामदग्न्यपरशुधारेव वशीकृत सकलराजमण्डला विन्ध्यवनभूमिरिव वेत्तलतावती राज्याधिदेवतेव विग्रहिणी, प्रतीहारी समुपसृत्य क्षितितल-निहित-जानु-करकमला सविनयमब्रवीत्।

अथवा

सहसैव तस्मिन् महावने संत्रासित-सकलवनचरः, सरभ समुत्पतत्पतत्रि -पक्ष पुटशब्दसन्ततः, भीत-करिपोत-चीत्कारपीवरः, प्रचलितलताकुल-मत्तालिकुलक्वणितमांसलः, परिभ्रम-दुद्धोणवनवराह खघर्घरो, गिरिगुहा-सुप्त-प्रबुद्ध-सिंहनादोपवृंहितः, कम्पयन्निव तरून्, भगीरथावतार्थ्य -माणगङ्गाप्रवाहकलकल-बहलो भीतवन देवता कर्णितो मृगयाकोलाहल ध्वनिरुदचरत्। आकर्ण्य च तमहमश्रुतपूर्वमुपजातवेपथुरर्भकतया जर्ज्जरित-कणविवरो भयविह्वलः समीपवर्त्तिनः पितुः प्रतीकार बुद्ध्या जराशिथिल पक्ष-पुटान्तरमविशम्।

3. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए—

गुरुद्वयाय गुरुणोरुभयोरथ कार्ययोः।
हरिर्विप्रतिषेधं तमाचचक्षे विचक्षणः।

अथवा

चतुर्थोपायसाध्ये तु रिपौ सान्त्वमपक्रिया।
स्वेद्यमामज्वरं प्राज्ञः कोऽम्भसा परिषिञ्चति॥

4. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये—

साहित्य पाथोनिधिमन्थनोत्थं,
कर्णामृतं रक्षत हे कवीन्द्राः।
यदस्य दैत्या इव लुण्ठनाय,
काव्यार्थचौराः प्रगुणी भवन्ति॥

अथवा

चालुक्यवशांमल मौक्तिकश्रीः,
सत्याश्रयोऽभूदथ भूमिपालः।
खड्गेन यस्य भ्रुकुटि क्रुधेव,
द्विषां कपलान्यपि चूर्णितानि॥

5. निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिये—

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनाना पथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामण्वि इव॥

अथवा

प्रजानाथं नाथ प्रसभमधिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरयमिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेयातं दिवमपि सपात्रकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥